B.Com (HONS) (P.I)
P1 - A/cs & finance (H)
Paper - Ist
Financial Accounting
Date - 06.07.2020

प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय राजनगर
(मधुबनी)

UNIT - II

TOPIC - INSTALMENT PAYMENT SYSTEM

माल बिक्री की एक ऐसी पद्धति जिसमें क्रेता व विक्रेता के बीच आपसी अनुबंध के आधार पर संपत्ति का स्वामित्व बिक्री के समय ही क्रेता को हस्तांतरित हो जाता है एवं संपत्ति की सुपुर्दगी भी कर दी जाती है तथा बिक्री की राशि का भुगतान किस्तों द्वारा ब्याज शामिल व अतिरिक्त ब्याज के रूप में किया जा सकता है, उसे किश्त भुगतान पद्धति कहा जाता है. यह बिक्री अनुबंध का एक ऐसा ठहराव है जिसके अंतर्गत क्रय मूल्य का भुगतान किश्तों की निर्धारित संख्या में निश्चित समयावधि के बाद किया जाता है. क्रेता द्वारा प्रथम किश्त का भुगतान करने के [redacted] पश्चात् माल का अधिकार व स्वामित्व विक्रेता से क्रेता को हस्तांतरित हो जाता है.

किश्त भुगतान पद्धति की विशेषता :—

किश्त भुगतान पद्धति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

(i) उधार बिक्री का होना
(ii) कीमत का भुगतान किश्तों में होना.
(iii) अनुबंध के पश्चात् माल की सुपुर्दगी व स्वामित्व का हस्तांतरण क्रेता को होना.
(iv) किसी किश्त का क्रेता द्वारा भुगतान न होने पर विक्रेता को दावा करने का अधिकार होना.

Scanned with CamScanner

(v) क्रेता द्वारा बिक्री करने या गिरवी रखने पर दूसरे व्यक्ति को श्रेष्ठ स्वत्वाधिकार प्राप्त होना।

DIFFERENCE BETWEEN HIRE PURCHASE SYSTEM AND INSTALMENT PAYMENT SYSTEM.

आधार	किराया क्रय पद्धति	किश्त भुगतान पद्धति
1. स्वभाव	इस पद्धति का स्वभाव एक किराये प्रसंविदे की तरह होता है, जबकि बाद में बिक्री का हो जाता है।	जबकि इस पद्धति का स्वभाव प्रारंभ से ही एक बिक्री का प्रसंविदा होता है।
2. स्वामित्व का हस्तांतरण	इसके अनुसार अंतिम किश्त का भुगतान होने पर ही स्वामित्व का हस्तांतरण क्रेता पर होता है।	जबकि इसमें स्वामित्व का हस्तांतरण क्रेता को अनुबंध के पश्चात् ही हो जाता है।
3. माल की वापसी	क्रेता द्वारा किश्त का भुगतान न किये जाने पर विक्रेता को कुछ विशेष दशाओं में माल वापस लेने का अधिकार होता है।	जबकि इसमें क्रेता द्वारा किश्त का भुगतान न करने पर विक्रेता को माल वापस लेने का अधिकार नहीं होता है।
4. माल की मरम्मत का दायित्व	इसके अनुसार अंतिम किश्त के भुगतान के पहले तक मरम्मत का दायित्व विक्रेता पर रहता है, क्योंकि इस अवधि तक विक्रेता ही माल का मालिक होता है।	जबकि इसमें विक्रेता पर मरम्मत का कोई दायित्व नहीं होता है क्योंकि प्रारंभ से ही क्रेता का माल पर अधिकार होता है।

Scanned with CamScanner

आधार	किराया क्रय पद्धति	किस्त भुगतान पद्धति
5. निक्षेप	इस पद्धति में क्रेता निक्षेपग्रहीता (Bailee) होता है।	जबकि इसमें क्रेता निक्षेप ग्रहीता नहीं होता है।
6. जोखिम	इसके अंतर्गत अंतिम भुगतान तक जोखिम विक्रेता पर ही रहता है।	जबकि इसमें जोखिम सदैव क्रेता पर रहती है।
7. अवशिष्ट ग्रहण के लिए प्रावधान	इस पद्धति में अवशिष्ट ग्रहण के लिए प्रावधान की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि विक्रेता को माल वापस लेने का अधिकार होता है।	जबकि यहां अवशिष्ट ग्रहण के लिए प्रावधान करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि विक्रेता को [redacted] माल वापस लेने का अधिकार नहीं होता है।
8. ब्याज उचन्त खाता	इस पद्धति के अनुसार Interest Suspense A/C नहीं खोला जाता है।	जबकि इसके अनुसार Interest Suspense A/C खोला जाता है।
9. विक्रेता का शेष राशि	इसमें विक्रेता के शेष राशि को सम्पत्ति पक्ष की ओर सम्पत्ति में से घटाकर दिखायी जाती है।	जबकि इसमें शेष राशि को दायित्व पक्ष की ओर ब्याज उचन्त खाते की राशि घटाकर दर्शायी जाती है।
10. ब्याज का खाता	इसके अंतर्गत क्रेता व विक्रेता दोनों की पुस्तकों में ब्याज खाता खोला जाता है।	जबकि इसमें ब्याज की राशि को ब्याज उचन्त खाते से सीधा P/L A/C में हस्तांतरित कर देते हैं।

Scanned with CamScanner